मध्यकालमे नेपाल उपत्यकाक प्रसिद्ध मल्ल-राजवंशक भक्तपुर शाखामे उद्‌भूत राजा जगत्प्रकाशमल्ल (1639-73 ई.) राजत्व ओ कवित्वसँ सम्पन्न एकटा विशिष्ट साहित्यकार छलाह। साहित्य, संगीत ओ कलाक क्षेत्रमे हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण रहलनि। साहित्यविद्याविद्, वैदग्ध्यपाथोधि, गन्धर्व-विद्यागुरु सन विरुदसँ विभूषित जगत्प्रकाश जीवनक अल्पावधि ओ संघर्षमय राजनीतिक परिस्थितिक मध्यहु साहित्य-सर्जनक प्रति समर्पित रहलाह। कवि ओ नाटककारक रूपमे ख्यात एहि साहित्यस्रष्टाक अनेक गीत-संग्रह ओ नाटक सब उपलब्ध अछि। पौराणिक परिवेशमे रस-सृष्टि हिनक काव्य-नाटकमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। विविध रसमध्य भक्ति ओ श्रृंगारक विशेष अवक्षेपण, प्रेमक श्रेष्ठता, निरलंकृत सरल भाषामे भावाभिव्यक्ति, संगीततत्त्वक व्यापकता हिनक वैशिष्ट्य थिकनि। मध्यकालक मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाश प्रायः एकमात्र कवि थिकाह जनिक काव्यमे सर्वथा वैयक्तिक भावावेश ओ आत्मानुभूतिक कारुण्यपूर्ण निश्छल ओ अनाबिल अभिव्यंजना देखल जाइछ। वास्तवमे जगत्प्रकाशक कृति मैथिलीक संगहि भारतीय साहित्यधाराक महत्त्वपूर्ण सम्पति थिक।

एकर रचयिता डा. रामदेवझा, विश्वविद्यालय प्राचार्य, मैथिली-विभाग ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, मैथिली साहित्यक वरिष्ठ अध्यापक ओ विशिष्ट विद्वाने नहि, आलोचक-गवेषकक संगहि प्रतिष्ठित कथाकार, नाटककार, निबन्धकार ओ कवि सेहो छथि। मैथिली क्षेत्र मे सव्यसाची साहित्यकारक रूपमे विश्रुत डाक्टर झाक 'एक खीरा : तीन फाँक,' 'मनुक सन्तान', 'धरती माता', 'इजोती रानी' कथा-संकलन; 'पसिझैत पाथर' नाट्य-संग्रह; 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका', 'मैथिली शैव साहित्य', 'उमापति' अनुसन्धान-आलोचना एवं अन्यान्य बहुशः शोध-निबन्ध ओ सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित छनि।

आवरण : जगत्प्रकाशक अप्रकाशित ग्रन्थक पाण्डुलिपिक किछु पृष्ठक प्रतिच्छवि

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

जगत्प्रकाशमल्ल

रामदेवझा

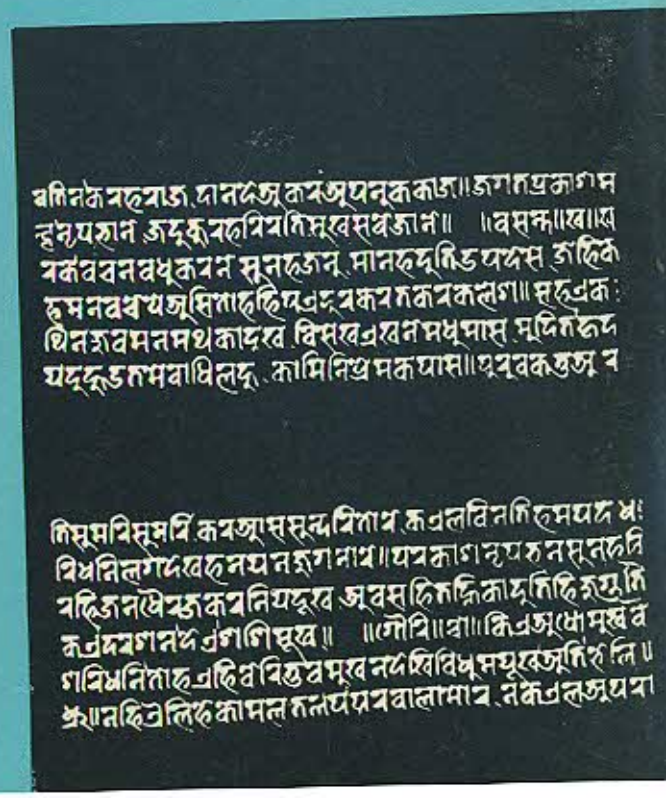

भारतीय साहित्यक निर्माता

जगत्प्रकाशमल्ल

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता राजाक समक्ष भगवान बुद्धक माया रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

जगत्प्रकाशमल्ल

रामदेवझा

साहित्य अकादेमी

Jagat Prakash Mall : A monograph on medieval Maithili poet
by Ramdeo Jha. Sahitya Akademi, New Delhi (1990)

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1990

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवन तारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता 700 053
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

मुद्रक
भारती प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा
दिल्ली 110 032

प्राक्कथन

मध्यकालक बहिरंग मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाशक महत्त्वपूर्ण स्थान मानल जाइत अछि। नेपालक भक्तपुरक मल्ल राजवंशमे उद्भूत महाराज जगत्प्रकाश-मल्ल विशिष्ट कवि ओ नाटककार रूपमे विख्यात छथि। राजत्व ओ साहित्य-सृष्टिक अद्भुत संगम हिनक व्यक्तित्वमे देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशक जीवन राजा-दैव दुहूसँ प्रताडित रहलनि। बाल्यकालमे मातृ-पितृ-वियोग, पारिवारिक स्नेह-वात्सल्यक छत्रच्छायाक अभाव, समस्त जीवनमे प्रतिवेशी शासक द्वारा निरन्तर आक्रमण ओ अत्याचार तथा अन्ततः अल्पायुमे मृत्यु सन परिस्थितिकेँ देखैत जगत्प्रकाश द्वारा निरन्तर संघर्ष, भक्तपुरक सत्ता-प्रतिष्ठाक पुनस्संस्थापन, पारिवारिक दायित्वक निर्वाह ओ साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे प्रभूत योगदान वास्तवमे अभिभूत कऽ देबऽवला अछि। परन्तु समग्रतामे हिनक जीवन ओ साहित्यक समालोचनाक एखनधरि कोनो प्रयास नहि भेल छल। अतः कवि नाटक-कारक रूपमे जगत्प्रकाशमल्ल पर ई सर्वप्रथम परिचयात्मक ओ आलोचनात्मक पुस्तक थिक। एहिठाम हुनक रचनाक साहित्यिक पृष्ठभूमि, समकालिक राज-नीतिक परिवेश, हुनक जीवन ओ साहित्यक परिचय दैत ओकर विशेषताक विश्लेषण कयल गेल अछि। एहि क्रममे अनेक नवीन तथ्यक उद्घाटन ओ निष्कर्षक प्रतिपादन भेल अछि। संभव अछि, कतोक विद्वान् एहिसँ भिन्नो अभिमत रखैत होथि अथवा भविष्यमे नवीन तथ्यक आलोकमे नवीन अवधारणा बनय। तथापि प्रस्तुत विनिबन्ध जगत्प्रकाशक काव्य-व्यक्तित्वक निरूपण-रेखांकनमे अवश्य सहायक सिद्ध होयत।

एकटा विशिष्ट साहित्य-निर्माता होइतो जगत्प्रकाशक समग्र कृति प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि। नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे हिनक अप्रकाशित कृतिक पाण्डुलिपि सब सुरक्षित अछि। एहि ग्रन्थक लेखनमे विशेष रूपसँ अप्रकाशित पाण्डुलिपि पर अवलम्बित रहबाक अनिवार्य विवशता रहल अछि।

पुस्तकक शैली सामान्यतः विवरणात्मक राखल गेल अछि। अत्यावश्यक भेले पर कतहु-कतहु सन्दर्भ-निर्देश कयल गेल अछि। एहिठाम कालगणनामे नेपाल संवत् ओ इसवी सन दुहूक उपयोग कयल गेल अछि। स्मरणीय अछि जे नेपाल-

संवत्क प्रवर्त्तन 880 इसवीक कार्त्तिक अमावास्याकेँ भेल छल। अतः सामान्यतः नेपालसंवत्मे 880 वर्ष जोड़लापर इसवी सन ज्ञात होइछ तथा इसवीसनमे सँ एतबहि घटौलापर नेपाल संवत् प्राप्त होइछ जकरा संक्षेपमे ने० सं० लेहो लिखल जाइत अछि।

पुस्तक-लेखनमे आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', पण्डित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' तथा डॉ० शैलेन्द्रमोहनझासँ महत्त्वपूर्ण विमर्श प्राप्त भेल अछि। लेखक एहि गुरुजनक प्रति नतमस्तक छथि। प्रो० लक्ष्मीकान्तझा (मैथिली विभाग, सी० एम्० कालेज दरभंगा), डॉ० रत्नेश्वरझा (संस्कृत विभाग, सी० एम्० कालेज, दरभंगा) तथा प्रो० भोलाझा (मैथिली विभाग, जे० एन० कालेज, नेहरा, दरभंगा) क कतिपय सामग्रीक उपयोग करबाक सौविध्य एहि ग्रन्थक लेखनमे प्राप्त भेल तदर्थ कृतज्ञता निवेदित अछि। प्रो० भीमनाथझा (मैथिली विभाग, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) धन्यवादक भागी छथि जे ग्रन्थक पाण्डुलिपिक अधिकांश भाग धैर्यपूर्वक पढ़ि अनेक संशोधनक प्रस्ताव कयलनि। भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे जगत्प्रकाशमल्ल पर मैथिलीमे विनिबन्ध-लेखनक सुअवसर प्रदान करबाक हेतु लेखक साहित्य अकादेमीक प्रति हृदयसँ आभारी छथि।

श्रावणी पूर्णिमा
17 अगस्त, 1989
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा

—रामदेवझा

विषय-सूची

प्राक्कथन	5
जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ववर्त्ती मैथिली साहित्य-धारा	9
नेपालीय मैथिली साहित्य ओ जगत्प्रकाशमल्ल	15
जगत्प्रकाशमल्लक परिवार ओ परिजन	20
साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे जगत्प्रकाशमल्लक योगदान	28
जगत्प्रकाशमल्लक जीवनिका	34
जगत्प्रकाशमल्लक कृति ओ भाषा	40
जगत्प्रकाशमल्लक नाटक	62
जगत्प्रकाशमल्लक गीत	102
उपसंहार	115
सहायक ओ सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची	118

जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ववर्त्ती मैथिली साहित्य-धारा

मैथिली साहित्यक इतिहासक मध्यकाल साधारणतः सोलहम शताब्दीक मध्यसँ मानल जाइत अछि। मध्यकालक मैथिली साहित्य मिथिलाक सीमासँ बाहरो पूर्वोत्तर भारतक विस्तृत भूभागमे प्रसृत-विकसित भेल। मिथिला ओ मिथिलासँ बाहर प्रवहमान साहित्य-धारामे प्रवृत्तिमूलक भिन्नता रहल अछि। अतः समस्त मध्यकालिक मैथिली साहित्यकेँ दुइ वर्गमे राखल जा सकैत अछि। मिथिलामे जे साहित्य रचित भेल तकर रचयिता मिथिलावासी छलाह। हुनका लोकनिक मातृ-भाषा मैथिली छलनि तथा हुनका लोकनिक सामाजिक परिवेश सामान्यतः मिथिले छल। मिथिलाक एहि साहित्य-धाराकेँ **अन्तरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्य** कहि सकैत छी। दोसर दिस मिथिलासँ बाहर एकटा वृहत्तर क्षेत्रक विभिन्न जन-पदमे मैथिली काव्य तत्तत् जनपदक जनसमुदायकेँ आकृष्ट कयलक। ओहन कवि-साहित्यकार जे मिथिलावासी नहि छलाह, जनिका लोकनिक मातृभाषा मैथिली नहि छलनि तथा भाषिक परिवेश सेहो मैथिलीसँ भिन्न छलनि; सेहो लोकनि मैथिलीक काव्य-माधुरीसँ आकृष्ट भऽ मैथिलीमे काव्य-सृष्टि करैत रहलाह एवं हुनक समाज ओहि काव्यक रसपान करैत रहल। बंगाल, असम, उड़ीसा ओ नेपालमे मैथिलीक ई काव्य-परम्परा जीवन्त रहल। अतः एहि चारू प्रदेशक मैथिली साहित्यकेँ **बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्य** कहब उपयुक्त होयत। बंगाल, असम ओ उड़ीसाक मैथिली साहित्यकेँ **ब्रजबुलि साहित्यक** अभिधान देल गेल अछि। परन्तु नेपालक मैथिली साहित्यकेँ ब्रजबुलिक अन्तर्गत परिगणित करब समीचीन नहि कहल जा सकैत अछि; कारण एकर प्रेरणा, पृष्ठभूमि ओ परिवेश ब्रजबुलिसँ सर्वथा भिन्न रहल। तेँ एकरा **नेपालीय मैथिली साहित्य** कहबे उपयुक्त होयत।

बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक नेपालीय परम्परामे अनेकानेक कवि-नाटककार प्रादुर्भूत भेलाह जाहिमे एकटा प्रमुख नाम छनि **जगत्प्रकाशमल्लक**। परन्तु जगत्प्रकाशमल्लक सम्बन्धमे विचार करबासँ पूर्व ओहि पृष्ठभूमि ओ परम्पराक विश्लेषण एवं परिचय अपेक्षित अछि जाहिसँ बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक एतेक विकास संभव भऽ सकल तथा मैथिली साहित्यक इतिहासमे नेपालकेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान भेटि सकल।

एहि ठाम स्मरणीय जे नवमे-दशम शताब्दीमे बौद्ध सिद्ध लोकनि अपन भावाभिव्यक्तिक माध्यम बनाय पूर्वाञ्चलक लोकभाषाकेँ प्रतिष्ठित कऽ देलनि। चर्याचर्यविनिश्चयक राग-ताल-बद्ध गीत सब एहि बातक प्रमाण अछि जे ओहि कालमे लोकभाषामे जे गेयधर्मिताक गुण छल ताहिसँ ओ लोकनि पूर्ण प्रभावित छलाह। प्राच्ये भारतमे बारहमे शताब्दीमे जयदेव लोकभाषाक गेयधर्मिता तथा रागमय गीतात्मकताक आश्रयण कऽ संस्कृत भाषामे राधाकृष्णक प्रेमलीला विषयक **गीत गोविन्द** नामक प्रबन्धक रचना कयल। एहि कृतिक बाह्य स्वरूप प्रबन्धात्मक छल परन्तु आभ्यन्तर संरचना गीतात्मक छल जकरा नामोमे संयोजित कऽ देल गेल अछि। जयदेवक ई संस्कृत भाषामय कोमल-कान्त पदावली, सरल पदबन्ध, लयात्मकता, अन्त्यानुप्रासिकता तथा रसवत्तामे संस्कृत काव्य-परम्परासँ भिन्न तथा लोकभाषाक अत्यन्त निकट छल। तेँ डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी एकरा भारतीय साहित्य मध्य नवयुग अर्थात् भाषा-युगक प्रवेश-गीत कहने छथि।[1] आ एही विशेषताक कारणे **गीत गोविन्द** अत्यन्त लोकप्रिय भेल। जनमानस जयदेवक काव्य-रस-सीकरसँ आप्यायित भऽ गेल। परवर्त्ती कवि-मानस पर सेहो एकर प्रभाव पड़ब स्वाभाविक छल। गीत गोविन्दक विषय ओ शैलीक अनुसरण संस्कृत ओ लोकभाषा, दुहूक माध्यमे होमऽ लागल। परन्तु दुहूमे अनुसरणक प्रक्रियामे भिन्नता देखल जाइत अछि। संस्कृतमे जयदेवक प्रबन्ध शैलीकेँ यथावत् स्वीकार कऽ लेल गेल जे ओहि पद्धति पर रचित विभिन्न संस्कृत काव्यकृतिसँ स्पष्ट अछि। परन्तु लोकभाषामे **गीतगोविन्दक** प्रबन्ध शैलीकेँ छोड़ि ओकर गीतशैली मात्रकेँ मुक्तक काव्यक रूपमे ग्रहण कयल गेल।

नव्य भारतीय आर्यभाषा सभक आदिकालीन साहित्येतिहासक पर्यालोचनसँ ई बात स्पष्ट होइत अछि जे जयदेवक प्रभाव उच्छल प्रवाहक रूपमे सर्वप्रथम मैथिलीएमे अवक्षेपित भेल : से भेल कविकोकिल विद्यापतिक ललितपदविन्यासमय रससिक्त अजस्र गीति-रचनामे। **गीतगोविन्दक** रचनाकार जयदेव छलाह, तेँ विद्यापति **अभिनवजयदेवक** रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह।

परन्तु ई कहब जे सर्वथा जयदेवक प्रभावसँ विद्यापतिमे अकस्मात् काव्यस्फुरण भेलनि—समीचीन नहि लगैत अछि। विद्यापति जाहि देसिल वयनाकेँ अपन काव्य-सर्जनक माध्यम बनौलनि, ताहिमे हुनकासँ पूर्वक एकटा समृद्ध साहित्य-परम्पराक आधार विद्यमान छल। गीत, नाटक ओ गद्य-साहित्यक क्षेत्रमे मैथिली प्राक्विद्यापतिए युगमे अपन अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक परिचय दऽ चुकल छल।

बौद्ध सिद्धलोकनिक **चर्यागीतिक** उत्तराधिकार मैथिलीयोकेँ ओतवे प्राप्त

1. जयदेव—डा० सुनीति कुमार चटर्जी, मैथिली अनुवाद, डॉ० शैलेन्द्रमोहनझा, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, 1983, पृ०-10

छलैक जतबा मागधी-प्रसूत अन्य भाषा सबकेँ। परन्तु अन्य कोनहु मागधीजात नव्यभारतीय आर्यभाषामे चर्यागीतक शैलीक निर्बाध परम्परा देखबामे नहि अबैत अछि। परन्तु जाहि कालमे जयदेव **गीतगोविन्दक** रचना कयल ठीक ओही काल-सन्निधिमे विक्रमशिला महाविहारमे एकटा बौद्धचिन्तक विनयश्रीकेँ मैथिलीमे गीत-रचना करैत देखैत छियनि। विनयश्रीक एहि गीतक उद्धार महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा सम्भव भऽ सकल। विनयश्रीक गणना सिद्ध लोकनिमे नहि होइत छनि मुदा हुनक गीतमे चर्यागीतक समस्त विशेषता पाओल जाइत अछि। आगाँ तेरहम-चौदहम शताब्दीक सन्धिकालमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरकेँ साहित्य-मंच पर अपन बहुमुखी प्रतिभाक संग उपस्थित देखैत छियनि।

मैथिलीक परिमार्जित शैलीमे रचित ज्योतिरीश्वरक गद्यग्रन्थ **वर्णरत्नाकर** केँ नव्यभारतीय आर्यभाषामे सर्वप्रथम **गद्यग्रन्थ** होयबाक गौरव प्राप्त छैक। कविशेखर एक दिवसमे चारिसय श्लोक-रचना करबाक सामर्थ्य रखैत छलाह किन्तु ओहि सामर्थ्यक प्रतिफल सम्प्रति कालक गर्त्तमे चल गेल अछि। तथापि हुनक एकगोट नाट्यकृति **धूर्त्तसमागम** उपलब्ध अछि। ज्योतिरीश्वरमे प्रयोगधर्मिताक प्रति एकटा सहज रुझान दृष्टिगोचर होइत अछि जकर प्रमाणमे **धूर्त्तसमागमकेँ** प्रस्तुत कयल जा सकैछ।

धूर्त्तसमागम नाट्यशास्त्रक दृष्टिएँ रूपकक एकटा प्रभेद **प्रहसन** थिक। एहि प्रहसनक दुइ गोट रूप देखल जाइत अछि। पहिल रूप ओ थिक जाहिमे संस्कृत नाट्यपरम्पराक अनुरूप संस्कृत-प्राकृतक गद्य-पद्य संवादक प्रयोग भेल अछि। ई रूप मिथिला एवं मिथिलासँ बाहरक संस्कृतज्ञ प्रेक्षकक लेल छल। **धूर्त्तसमागमक** ई रूप लोकप्रियता सेहो प्राप्त कयलक ताहिमे सन्देह नहि। परन्तु एकर एक गोट दोसर रूप सेहो छल जकर एक जीर्ण खण्डित प्रतिक अन्वेषण नेपालक दरबार लाइब्रेरीसँ कऽ कऽ डा० जयकान्तमिश्र सर्वप्रथम प्रकाशित करबौलनि। एहि प्रतिमे संस्कृत प्रहसनक ओही संरचनामे मैथिली गीतक सेहो समावेश अछि जाहिमे पात्रक प्रथम प्रवेशक सूचना; ओकर रूप, गुण, स्वभाव ओ परिधानक वर्णन; पात्रक कथन तथा नाटकीय क्रिया आ घटनाक सूचना देल गेल अछि।

धूर्तसमागमक गीत-योजना वास्तवमे मिथिलामे ओहि कालमे प्रचलित नाट्यशैलीक संकेत दैत अछि जाहिमे गीतक प्रधानता रहैत छल आ से गीत रहैत छल मिथिला भाषाक। ज्योतिरीश्वर संस्कृत नाट्य पद्धति तथा लोकनाट्य पद्धतिक सम्मिश्रणसँ अभिनव नाट्यशैलीक निर्माण कयलनि आ प्रायः तेँ हुनक एकटा विशेषण **अभिनवभरत** सार्थक लगैत अछि।

धूर्तसमागमक गीत सब राग-ताल-निर्देश पूर्वक अछि। छन्द मात्रा पर आधृत तथा अन्त्यानुप्रासक निर्वाह सर्वत्र अछि। नारी-स्वरूपक वर्णनमे जयदेवक प्रभाव परिलक्षित होइछ अवश्य परन्तु अन्यत्र स्थानीयताक रंग विशेष। ई सब, गीतक

मैथिली परम्परा दिस संकेत करैत अछि।

एहि ठाम **प्राकृत पैङ्गलम्**क ओहन पद्य सभ दिस ध्यानाकृष्ट करब अपेक्षित जाहिमे भाषाक स्वरूप मिथिलापभ्रंशक अछि तथा ओकर विषय-वस्तु वैह अछि जकरा परवर्त्ती मैथिली कवि पल्लवित कयल। पद्यरचनाक दृष्टिएँ डाकक वचन ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैत अछि जकर उद्धार प० जीवानन्द ठाकुर प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ तथा तालपत्रक पोथी सबसँ कयलनि एवं जकर रचनाकाल हुनका विचारेँ बारहम-तेरहम शताब्दी भऽ सकैत अछि।

प्राक्मैथिली साहित्यक जतवा साहित्यिक सामग्री सुनिश्चित रूपेँ ज्ञात अछि तदनुसार चर्यागीत, विनयश्रीक गीत, ज्योतिरीश्वरक गद्य ग्रन्थ ओ गीतिमय नाटक, प्राकृत पैङ्गलक मिथिलापभ्रंशक पद्य तथा डाकक वचनक पद्यक साहित्यिक परम्पराक रिक्थ विद्यापतिकेँ प्राप्त छलनि। विद्यापति अपन काव्यरचनामे जयदेवक शैलीक संयोगसँ एकटा नवीन प्रकारक गीत-शैलीक आविष्कार कयलनि। संगहि **गोरक्षविजय** नाटकक रचना द्वारा ओ मिथिलाक ओहि नाट्यशैलीकेँ संबलित कयल जकर सुनिश्चित रूप-रेखा ज्योतिरीश्वरक मैथिली **धूर्त्तसमागम**मे देखल जाइत अछि। विद्यापतिक अभिनव गीत-शैली ओ मिथिलाक लोकभाषामय नाट्यशैली, पश्चात्काल मिथिला ओ प्राच्यभारतक विभिन्न जनपदमे अनुकरणीय भऽ उठल। मिथिलासँ बाहर अनुकरणक ई परम्परा तीन-चारि शताब्दी धरि अव्याहत गतिएँ चलैत रहल आ एहि अन्तर्गत प्रचुर ओ प्रकृष्ट साहित्यक रचना होइत रहल जकरा स्थानीय रूपसँ जे नाम देल जाउक मुदा ठीक ई मैथिली साहित्य, बृहत्तर मैथिली साहित्य।

मैथिली भाषा-साहित्यक ई विस्तार इतिहासक एकटा अद्भुत घटना मानल जा सकैत अछि। साधारणतः राजनीतिक विजयक संग विजेता जातिक भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार विजित ओ शासित प्रदेशमे होइत देखल जाइत अछि। अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच, पोर्तुगीज इत्यादि भाषाक प्रचार एकर प्रमाण थिक। परन्तु मैथिलीक संग एहन कोनो राजनीतिक घटना नहि भेल। तखन एकर प्रचारक पृष्ठभूमिमे जे कारण रहल अछि से पूर्णतः सामाजिक ओ सांस्कृतिक कहल जा सकैछ।

मिथिला सब दिनसँ दार्शनिकक भूमि रहल अछि। विशेषतः स्मृति, न्याय, ओ मीमांसा दर्शनक क्षेत्रमे मैथिल मनीषी लोकनि भारतक नेतृत्व करैत रहलाह। जखन मगधकेँ केन्द्र बनाय बौद्ध लोकनि वैदिक धर्म एवं ओकर मान्यता पर प्रचण्ड प्रहार करऽ लगलाह तँ ओकर प्रतिरोध मिथिलाहिक दार्शनिक लोकनि कयलनि। बारहम शताब्दीमे उदयनाचार्य बौद्ध दार्शनिक लोकनिकेँ सर्वदाक हेतु निरस्त कऽ देलनि तथा तेरहम शताब्दीमे गंगेशोपाध्याय न्यायशास्त्रक एकटा नवे पद्धतिक प्रवर्त्तन कयल जे नव्य न्यायक नामसँ प्रख्यात भेल। मिथिला प्राचीन

न्याय एवं नव्य न्यायक केन्द्र बनि गेल। एहि प्रसंगमे महापण्डित राहुल सांकृत्यायनक अभिमत छनि जे—वाचस्पति मिश्रक बाद तँ ब्राह्मण-न्यायशास्त्र पर तिर्हुतक एकच्छत्र राज्य भऽ जाइत अछि। ओ उदयन ओ बर्द्धमान सन प्राचीन न्यायक आचार्यकेँ उत्पन्न करैत अछि, आओर गङ्गेश उपाध्यायक रूपमे तँ ओहि नव्य-न्यायक सृष्टि करैत अछि, जे आगाँ चलि ततेक विद्वत्प्रिय भऽ जाइत अछि जे प्राचीन न्यायशास्त्रक पठन-प्रणालिएकेँ एक प्रकारसँ उठाब कऽ दैत अछि। यद्यपि नव्यन्यायक विकासमे नवद्वीप(बंगाल)क सेहो योग अछि, तथापि हम ई निस्संकोच कहि सकैत छी जे वाचस्पति मिश्र(841 ई०)क बादसँ मिथिला (देशक अर्थमे) न्याय-शास्त्र(प्राचीन ओ नव्य दुहू)क केन्द्र बनि जाइत अछि, आओर प्रत्येक कालमे भारतक श्रेष्ठ नैयायिक बनबाक सौभाग्य कोनो मैथिलेकेँ भेटैत अछि।[1]

मिथिलामे अध्यापनक हेतु चौपाड़ि चलैत छल। भारतक अन्यान्य प्रदेशक दर्शन-शिक्षिक्षु लोकनि मिथिला दिस स्वाभाविक रूपेँ आकृष्ट भऽ ज्ञानार्जनक उद्देश्यसँ अबैत छलाह आ एहि चौपाड़ि सब पर वर्षक वर्ष रहि मैथिल गुरुसँ शास्त्र पढ़ैत छलाह। ई अन्यदेशीय छात्र लोकनि चिरकाल धरि मिथिला-निवास करैत एहि ठामक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे समरस भऽ अनायासे मिथिलाभाषा सीखि जाइत छलाह। मिथिलाभाषाक गीत-नाटक इत्यादिक आनन्द सहज रूपेँ प्राप्त होइत जाइत छलनि। ओ लोकनि निष्णात भऽ जखन अपन देश जाइत छलाह तँ मस्तिष्कमे मैथिल गुरुसँ अर्जित शास्त्र-ज्ञानक संग ठोर पर मिथिलाभाषा ओ कण्ठमे मैथिलीक गान, जाहिमे विद्यापतिक गीतक प्राचुर्य रहैत छल, सेहो लेने जाइत छलाह।

असम, बंगाल ओ उड़ीसामे मैथिली काव्यक लोकप्रियताक मूलमे मिथिलाक संग सांस्कृतिक अनुरूपता तथा भाषागत समरूपता सेहो महत्त्वपूर्ण कारण छल। एहि तीनू प्रदेशमे मूल मैथिली गानक परिपाटीक आधार पर स्थानीय कविलोकनि द्वारा काव्यरचना करबाक प्रेरक बनि गेल वैष्णव दर्शन। बंगाल-उड़ीसामे चैतन्य महाप्रभु मैथिली गानकेँ मधुरा-भक्तिक दार्शनिक संस्पर्श प्रदान कयल, तँ असममे महापुरुष शंकरदेव अपन वैष्णव धर्मक प्रचार-माध्यमक रूपमे मिथिलाभाषाकेँ अंगीकार कयल।

बंगाल-उड़ीसाक ब्रजबुलि साहित्य एवं असमक अंकीयानाट ओ बरगीतक परम्परा ओकरहि परिणाम थिक।

मैथिली-काव्यक देशान्तरमे प्रचार-प्रसारक एकटा दोसरो माध्यम रहल। मिथिलाक विद्वान्, कवि, संगीतज्ञ, विद्यावन्त, कलावन्त लोकनिकेँ देशक अन्य

---

1. मिथिलाङ्क, मिथिला-मिहिर, 1936 मे प्रकाशित निबन्ध 'बौद्ध नैयायिक', पृष्ठ 12।